।। आरती श्री दुर्गा जी की।।

दोहा: दुर्गा दुर्गति दूर कर, मंगल कर सब काज।
मन मन्दिर उज्ज्वल करो, मात भवानी आज ।।

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ।।
जय अम्बे गौरी .....

मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृग मदको।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्र बदन नीको ।।
जय अम्बे गौरी .....

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ।।।
जय अम्बे गौरी .....

केहरि वाहन राजत, खड़ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेक्त, तिनके दुख हारी ।।
जय अम्बे गौरी .....

कानन कुण्डल शोमित, नासाचे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ।।
जय अम्बे गौरी .....

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूत्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती ।।
जय अम्बे गौरी .....

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।
जय अम्बे गौरी .....

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।।
जय अम्बे गौरी .....

चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा, औ बाजत डमरू ।।
जय अम्बे गौरी .....

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता।।

जय अम्बे गौरी .....
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ।।
जय अम्बे गौरी .....
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत, कोटिरतन ज्योति ।।
जय अम्बे गौरी .....
श्री) अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे ।।
जय अम्बे गौरी .....
जय अम्बे गौरी, मैया जय मंगलमूर्ति, मैया जय आनन्द करनी।
तुमको निशिदिन ध्यायत, हरि ब्रह्मा शिवजी ।।
जय अम्बे गौरी .....दोहा: दुर्गा दुर्गति दूर कर, मंगल कर सब काज।

मन मन्दिर उज्ज्वल करो, मात भवानी आज।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी।।
जय अम्बे गौरी .....
मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृग मदको।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्र बदन नीको।।
जय अम्बे गौरी .....
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।।
जय अम्बे गौरी .....
केहरि वाहन राजत, खड़ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेक्त, तिनके दुख हारी।।
जय अम्बे गौरी .....
कानन कुण्डल शोमित, नासाचे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति।।
जय अम्बे गौरी .....
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूत्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती।।
जय अम्बे गौरी .....

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।
जय अम्बे गौरी .....
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।
जय अम्बे गौरी .....
चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा, औ बाजत डमरू।।
जय अम्बे गौरी .....
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता।।
जय अम्बे गौरी .....
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी।।
जय अम्बे गौरी .....
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत, कोटिरतन ज्योति।।
जय अम्बे गौरी .....
श्री अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे।।
जय अम्बे गौरी .....
जय अम्बे गौरी, मैया जय मंगलमूर्ति, मैया जय आनन्द करनी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी।।
जय अम्बे गौरी .....